व्यावहारिक व्याकरण

शब्द और पद

शब्द

भाषा की लघुतम सार्थक स्वतंत्र इकाई को शब्द कहते हैं। जब तक कोई अर्थवान वर्ण–समूह स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होता है, उसे शब्द कहते हैं। शब्दकोश में पाए जाने वाले सब शब्द **'शब्द'** कहलाते हैं, क्योंकि वे अर्थवान भी होते हैं तथा स्वतंत्र (वाक्य से बाहर) भी होते हैं।

पद

जब कोई शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है तो वह स्वतंत्र नहीं रहता। वह अन्य शब्दों (पदों) से संबंधित हो जाता है। उसमें विभिन्न विभक्तियाँ लग जाती हैं। तब वह 'पद' कहलाता है।

शब्द और पद का अंतर – वाक्य से स्वतंत्र अर्थवान ध्वनि–समूह शब्द कहलाता है। वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है।

उदाहरण – 'लड़का' एक शब्द है। इसका कोश में एक अर्थ है। वाक्य में प्रयुक्त हुए बिना भी यह अर्थवान है। जब इसे वाक्य में प्रयुक्त किया जाता है तो यह स्वतंत्र नहीं रहता। तब इसका रूप भी बदल जाता है। उदाहरणतया –

लड़का रो रहा है।

लड़के ने अध्यापक से शिकायत की।

अध्यापक ने लड़कों को डाँटा।

अध्यापक ने कहा– लड़को! शोर न करो।

स्पष्ट है कि 'लड़का' शब्द वाक्य में प्रयुक्त होने पर विभिन्न रूप बदल रहा है।

'लड़का' 'लड़के' , 'लड़कों' , 'लड़को' – ये चार रूप स्पष्ट हैं। अतः ये चारों पद हैं।

पद के भेद :– हिंदी में पद निम्नलिखित पाँच प्रकार के होते हैं –

1. संज्ञा
2. सर्वनाम
3. विशेषण
4. क्रिया
5. अव्यय

प्रश्न1 शब्द किसे कहते है शब्द का उदाहरण दीजिए।

प्रश्न2 पद किसे कहते है।

अनुस्वार , अनुनासिक (चंद्रबिंदु)

अनुस्वार बिंदु (ं)

अनुस्वार एक व्यंजन ध्वनि है। इसके उच्चारण में नाक से अधिक साँस निकलती है और मुख से कम जैसे – अंक , अंश , पंच , अंग आदि। अनुस्वार की ध्वनि प्रकट करने के लिए वर्ण पर बिंदु लगाया जाता है। अनुस्वार (ं) को वर्णमाला का पंचम वर्ण कहा जाता है। इसका प्रयोग स्वर रहित नासिक्य व्यंजन यानि पंचम वर्ण 'ङ्' , 'ञ्' , 'ण्' , 'न्' तथा 'म्' के स्थान पर होता है।

जैसे –

'ङ्' (क वर्ग) = अंग (अङ्ग) , पंक (पङ्क)

'ञ्' (च वर्ग) = अंचल (अञ्चल)

ण् (ट वर्ग) = चंडी (चण्डी) , पाखंड (पाखण्ड)

अनुनासिक (चंद्रबिंदु) (ँ)

अनुनासिक (ँ) का प्रयोग उच्चारण की उस अवस्था में होता है, जब मुख और नाक दोनों से हवा निकले, लेकिन नाक से बहुत कम और मुँह से अधिक साँस निकलती है, इन्हें चंद्रबिंदु भी कहते हैं।

जैसे – दाँत, आँख, चाँद आदि।

चंद्रबिंदु या अनुनासिक का प्रयोग प्रायः सभी स्वरों के साथ होता है। जिन स्वरों की मात्राओं में शिरोरेखा होती है, वहाँ अनुनासिक का प्रयोग अनुस्वार (ं) के रूप में होता है।

जैसे – चिड़ियाँ – चिड़ियों

निरनुनासिक जिन स्वरों के उच्चारण में हवा केवल मुँह से निकलती है। उन स्वरों को 'निरनुनासिक' कहते है। जैसे – अ, आ, इ, ई आदि।

स्मरणीय तथ्य

अनुनासिकता के लिए चंद्रबिंदु (ँ) का प्रयोग होता है, किंतु जहाँ स्वर की मात्रा शिरोरेखा के ऊपर लगती है, वहाँ मात्र (ं) बिंदु का प्रयोग होता है, जैसे – मैं, कहीं, हैं, में आदि।

अनुस्वार और अनुनासिक के उदाहरण

अनुस्वार	अनुनासिक
अंश, वंश, हंस, कंस, संहार, मंदाकिनी, संगति, कंचन, व्यंजन, सुगंधित,	छाँव, महँगाई, ऊँचाई, चिड़ियाँ, अँधेरे, लहँगा, घूँघट, पाँच, बाँध, दाँत, आँख, चाँद,

प्रश्न–1 निम्नलिखित शब्दों में अनुस्वार, अनुनासिक का उचित प्रयोग करके उन्हे पुनः लिखिए।

आरभ कारवा आशका सकलित भाति

तरग सगमरमर सूघना

- Thank You
- Stay Home Stay Safe